Jahannam Ki Ghiza (Hindi)

ग़ीबत की तबाहकारियां क़िस्त नम्बर 3

जहन्नम की ग़िज़ा

कुल सफ़ह़ात 26

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

जहन्नम की ग़िज़ा

अल्लाह की रह़मत बन कर दुन्या में तशरीफ़ लाने वाले, अपनी उम्मत के ग़म में आंसू बहाने वाले आक़ा صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اَلْغِیْبَۃُ اَشَدُّ مِنَ الزِّنَا- या'नी **ग़ीबत** ज़िना से सख़्त तर है। लोगों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** (صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! **ग़ीबत** ज़िना से ज़ियादा सख़्त क्यूंकर है ? फ़रमाया : "मर्द ज़िना करता है फिर तौबा करता है, **अल्लाह** पाक उस की तौबा क़बूल फ़रमाता है और **ग़ीबत** करने वाले की मग़्फ़िरत न होगी, जब तक वोह न मुआ़फ़ कर दे जिस की **ग़ीबत** की है।" (شُعَبُ الْاِیمان ج ٥ص٣٠٦حدیث ٦٧٤١) और ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की रिवायत में है कि "ज़िना करने वाला तौबा करता है और **ग़ीबत** करने वाले की तौबा नहीं है।" **(اَیضاً حدیث ٦٧٤٢)**

मैं समझा शायद तूने ग़ीबत की है : एक नौ जवान ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की ख़िदमत में आ कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : मुझ से बहुत बड़ा गुनाह हो गया है, शर्म की वज्ह से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के सामने बयान करने की भी हिम्मत नहीं। फिर कुछ देर के बा'द कहने लगा : अफ़्सोस ! मैं ने **ज़िना** किया है। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : "मैं तो समझा था कि शायद तूने **ग़ीबत** का गुनाह किया है।" **(تذکرۃُ الاولیا ص١٧٣)**

ग़ीबत ज़िना से कब सख़्त है : ऐ आशिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! **ग़ीबत** किस क़दर ज़ियादा तबाहकार है ! अलबत्ता येह ज़ेह्न में रहे

www.dawateislami.net

कि जिस ज़िना में हुक़ूक़ुल इबाद शामिल नहीं सिर्फ़ उस ज़िना से **ग़ीबत** सख़्त तर है। **ग़ीबत** में ह़क़्क़ुल अ़ब्द या'नी बन्दे का ह़क़ उस सूरत में शामिल होगा जब कि जिस की **ग़ीबत** की है उस को पता चल जाए कि फ़ुलां ने मेरी **ग़ीबत** की है और अब **ग़ीबत** करने वाले के लिये तौबा के साथ साथ उस से **मुआ़फ़ी मांगनी** भी ज़रूरी है जिस की **ग़ीबत** की है वरना ख़ाली तौबा काफ़ी थी।

ग़ीबतों वग़ैरा गुनाहों के मुतअ़ल्लिक़ एक मा'लूमाती फ़तवा :

अब ग़ीबत वग़ैरा गुनाहों के मुतअ़ल्लिक़ फ़तावा रज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 162 ता 163 का एक मा'लूमाती इस्तिफ़्ता और फ़तवा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

सुवाल : ग़ीबत करना, झूट बोलना, ख़ास कर वोह झूट जिन से ख़ल्क़े ख़ुदा में फ़ितना हो। दो दोस्त में या शौहर बीवी में या बाप बेटे में या भाई भाई में उस झूट से रन्जिश हो जाए, बाहम जुदाई हो के घर की ख़राबी की नौबत आ जाए, और मुसल्मान के ऐ़ब की तलाश व तजस्सुस में रहना, कोई मुसल्मान अगर पोशीदगी से कोई गुनाह करता हो तो उस की तजस्सुस में लगे रहना और पता पाने पर या महज़ अपनी शुबा व क़ियास से उस को फ़ाश (ज़ाहिर) करना शोहरत देना किस दरजे का गुनाह है और गुनाहाने मज़्कूरए बाला का मुरतकिब फ़ासिक़ व मुस्तह़िक़े ला'नते ख़ुदा व रसूल है या नहीं ? और येह सब गुनाह शर्अ़न दरजए फ़िस्क़ में ज़िना से कम हैं या ज़ियादा या बराबर ? जवाब मुफ़स्सल और मुदल्लल (या'नी दलाइल के साथ) दरकार है। بَيِّنُوْا تُؤْجَرُوا (या'नी बयान फ़रमाइये और अज्रो सवाब कमाइये)

www.dawateislami.net

अल जवाब : येह सब गुनाहाने कबीरा हैं और इन का मुरतकिब फ़ासिक़ व मुस्तह़िक़े ला'नत। ह़दीस में फ़रमाया : اَلْغِيبَةُ اَشَدُّ مِنَ الزِّنا (या'नी) ग़ीबत सख़्त है ज़िना से। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج٥ ص٦٤ حدیث ٦٥٩٠) और ज़ाहिर है कि क़त्ले मोमिन **ग़ीबत** से अशद (या'नी सख़्त तर) है। और **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : ''وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ'' (پ٢، البقرة:١٩١) फ़ितना क़त्ल से सख़्त तर है। और इन सब में ह़क़्क़ुल इ़बाद (या'नी बन्दों का ह़क़) है तो उस ज़िना से ज़रूर बदतर है जिस में ह़क़्क़ुल इ़बाद न हो मगर वोह **झूट** जिस से किसी का ज़रर (या'नी नुक़्सान) न हो कि बे मस्लह़ते शरई हो तो गुनाह ज़रूर है मगर इसे ज़िना के बराबर नहीं कह सकते कि येह सग़ीरा है बा'दे इसरार कबीरा होगा। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم

पीछा मेरा ग़ीबत की मुसीबत से छुड़ा दे
हर बात संभल कर करूं तौफ़ीक़ ख़ुदा दे

ज़िना छोटा गुनाह नहीं : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! यहां शैत़ान कहीं वस्वसे डाल कर ज़िना पर न उक्साए कि येह तो मा'मूली सा गुनाह है। **वल्लाह !** हरगिज़ ऐसा नहीं, येह बात हमेशा ज़ेह्न में रखिये कि छोटे गुनाह को भी अगर कोई छोटा समझ कर करता है तो वोह **सख़्त कबीरा गुनाह** बन जाता है और ज़िना छोटा गुनाह भी नहीं बल्कि **गुनाहे कबीरा** है, इस का अ़ज़ाब पढ़िये और थरथराइये नीज़ जब ज़िना का अ़ज़ाब इतना होलनाक है तो **ग़ीबत** का अ़ज़ाब कितना दर्दनाक होगा इस का तसव्वुर जमा कर ख़ुद को डराइये :

दो[2] सांप नोच नोच कर खाएंगे : ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से रिवायत है : जो शख़्स चोरी या शराब ख़ोरी या ज़िना में

www.dawateislami.net

मुब्तला हो कर मरता है उस पर दो सांप मुक़र्रर कर दिये जाते हैं जो उस का गोश्त नोच नोच कर खाते रहते हैं। (شَرْحُ الصُّدُور ص ۱۷۲)

जहन्नमी ताबूत : मन्क़ूल है : जहन्नम में **आग के ताबूत** में कुछ लोग क़ैद होंगे कि जब वोह राह़त मांगेंगे तो उन के लिये ताबूत खोल दिये जाएंगे और जब उन के शो'ले जहन्नमियों तक पहुंचेंगे तो वोह बयक ज़बान फ़रियाद करते हुए कहेंगे : **या अल्लाह** पाक ! इन ताबूत वालों पर ला'नत फ़रमा। येह वोह लोग हैं जो औ़रतों की शर्मगाहों पर ह़राम त़रीक़े से क़ब्ज़ा करते थे। (بَحرُالدُّمُوع ص۱۶۷)

जन्नत में दाख़िले से मह़रूम : आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, "**आंसूओं का दरिया**" (300 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 229 ता 230 पर है मन्क़ूल है : **अल्लाह** पाक ने जब जन्नत को पैदा फ़रमाया तो उस से फ़रमाया : "कलाम कर।" तो वोह बोली : जो मुझ में दाख़िल होगा वोह सआ़दत मन्द है। तो **अल्लाह** पाक ने फ़रमाया : मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! तुझ में आठ क़िस्म के लोग दाख़िल न होंगे : शराब का आ़दी, ज़िना पर इसरार करने वाला, चुग़ल ख़ोर, दय्यूस, (ज़ालिम) सिपाही, हीजड़ा और रिश्तेदारी तोड़ने वाला और वोह शख़्स जो ख़ुदा की क़सम खा कर कहता है कि फ़ुलां काम ज़रूर करूंगा फिर वोह काम नहीं करता। (اِتحافُ السّادَة للزّبيدى ج ۹ص ۳۴۵)

येह रिवायत नक़्ल करने के बा'द **ह़ज़रते** अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ज़िना पर इसरार करने वाले से मुराद हमेशा ज़िना करते रहने वाला नहीं, इसी त़रह़ शराब के आ़दी से मुराद येह नहीं जो हमेशा शराब पीता रहे बल्कि मुराद येह है कि जब उसे शराब मुयस्सर हो

www.dawateislami.net

तो वोह पी ले और **अल्लाह** पाक के ख़ौफ़ की वज्ह से शराब पीने से बाज़ न आए। इसी त़रह़ जब उसे ज़िना का मौक़अ़ मिले तो (कर ले और) इस से बाज़ न रहे और न ही अपने नफ़्स को इस बुरी ख़्वाहिश की तक्मील से रोके। बेशक ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम ही है। (بَحرُالدُّمُوع ص١٦٧)

नज़र दिल में शह्वत का बीज बोती है : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि हर ऐ़ब से पाक, **अल्लाह** की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें देने वाले नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **اَلْعَيْنَانِ تَزْنِيَانِ** या'नी आंखें भी ज़िना करती हैं। (مُسندِ اِمام احمد ج٢ص٨٤حديث٣٩١٢) लिहाज़ा आंखों की ह़िफ़ाज़त ज़रूरी है। **हु़ज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो आदमी अपनी आंख को बन्द करने पर क़ादिर नहीं होता वोह अपनी शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त भी नहीं कर सकता। (اِحیاءُ الْعُلوم ج٣ ص١٢٥)

आंखों में पिघला हुवा सीसा : मन्क़ूल है : **जो शख़्स शह्वत से किसी अज्नबिय्या के हु़स्नो जमाल को देखेगा क़ियामत के दिन उस की आंखों में सीसा पिघला कर डाला जाएगा।** (هِدایه ج٢ ص٣٦٨)

आंखों में आग भर दी जाएगी : मुकाशफ़तुल क़ुलूब में है : जो कोई अपनी आंखों को नज़रे ह़राम से पुर करेगा क़ियामत के रोज़ उस की आंखों में आग भर दी जाएगी। (مُكاشَفَةُ القُلوب ص١٠)

आग की सलाई : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं : औ़रत के मह़ासिन (या'नी हु़स्नो जमाल) को देखना

इब्लीस के ज़हर में बुझे हुए तीरों में से एक तीर है, जिस ने ना महरम से आंख की हिफ़ाज़त न की उस की आंख में बरोज़े क़ियामत **आग की सलाई** फेरी जाएगी। (بَحرُالدُّمُوع ص۱۷۱)

जहन्नम से आज़ाद होने वाली आंखें : **आशिक़ाने** रसूल की मदनी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना की किताब, **''आंसूओं का दरिया''** (300 सफ़हात) सफ़हा 235 पर है **: अल्लाह** पाक ने हज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तरफ़ वहय फ़रमाई **: ''ऐ मूसा !** मैं ने तीन क़िस्म की आंखों को जहन्नम पर हराम फ़रमा दिया है, **एक** वोह आंख जो राहे ख़ुदा में पहरा देती है, **दूसरी** वोह आंख जो **अल्लाह** पाक की हराम कर्दा चीज़ों से रुक जाती है और **तीसरी** वोह आंख जो मेरे ख़ौफ़ से रोती है, और आंसू के इलावा हर शै की एक जज़ा है और आंसू की जज़ा रहमत, मग़्फ़िरत और जन्नत में दाख़िले के इलावा कुछ नहीं।'' (بَحرُالدُّمُو ص۱۷۲)

तुम जन्नत में मेरे साथ होगे : एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की **: या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं सिर्फ़ **एक महीने** के रोज़े रखता हूं इस पर इज़ाफ़ा नहीं करता, और सिर्फ़ **पांच** नमाज़ें पढ़ता हूं इस से ज़ियादा नहीं पढ़ता और मेरे **माल** में ज़कात फ़र्ज़ नहीं और न ही मुझ पर **हज** फ़र्ज़ है और न ही नफ़्ल हज करता हूं, मैं मरने के बा'द कहां जाऊंगा ? **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **तबस्सुम** फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया **:** तुम **जन्नत** में मेरे साथ होगे जब कि तुम अपने दिल को दो बातों या'नी **ख़ियानत और हसद** से बचाओ और अपनी ज़बान को दो बातों या'नी **ग़ीबत और झूट** से और दो बातों से आंखों को

www.dawateislami.net

बचाओ या'नी जिस की त़रफ़ नज़र करना **अल्लाह** पाक ने ह़राम क़रार दिया है उस की त़रफ़ न देखो और किसी मुसल्मान को **ह़क़ारत** से न देखो।

(قُوتُ الْقُلوب ج۱ ص۴۳۳)

इन्फ़िरादी कोशिश की बरकत : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **ग़ीबत** से ज़बान और **बद निगाही** से आंखों की ह़िफ़ाज़त करने का ज़ेह्न बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मा'मूल बनाइये, नेक आ'माल के मुत़ाबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारिये اِنْ شَآءَاللّٰه दोनों जहां में बेड़ा पार होगा, आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **मदनी बहार** गोश गुज़ार करता हूं : एक इस्लामी भाई अपने शह्र के एक मश्हूर सुन्नी जामिआ़ में **दर्से निज़ामी** के त़ालिबे इ़ल्म थे। एक इस्लामी भाई कभी कभार अपने मामूंजान के घर तशरीफ़ लाते थे और उन के मामूं उस मद्रसे के क़रीब रिहाइश पज़ीर थे, वोह इस्लामी भाई दौराने क़ियाम उन के मद्रसे में भी आते और त़लबा से मुलाक़ात कर के उन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** फ़रमाते, इन की उन से दोस्ती हो गई थी, वोह इन्हें **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल के बारे में बताया करते, उन की बातें सुन सुन कर वोह **दा'वते इस्लामी** के मुह़िब्बीन में शामिल हो चुके थे। उन्हीं की दा'वत पर इन्हें **फ़ैज़ाने मदीना** में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल हुई, उन की शिर्कत के पहले ही इज्तिमाअ़ में मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने **इ़मामा शरीफ़** के फ़ज़ाइल पर बयान किया, जिसे सुन कर वोह इस क़द्र मुतअस्सिर हुए कि हाथों हाथ इ़मामा ख़रीद कर अपने सर पर सजा लिया और बस्ते से **फ़ैज़ाने सुन्नत** भी ख़रीदी और अपनी

www.dawateislami.net

मस्जिद में इस का **दर्स** शुरूअ़ कर दिया। वक़्त गुज़रने के साथ उन्हों ने मुकम्मल तौ़र पर **मदनी हुल्या** अपना लिया। इज्तिमाअ़ में अपने साथ दीगर त़लबा को भी ले जाते, पहले हफ़्ते 3 इस्लामी भाई थे दूसरे हफ़्ते बढ़ कर इन की ता'दाद 12 हो गई। उन्हों ने दा'वते इस्लामी के **मदनी क़ाफ़िलों** में भी सफ़र किया और अपने अ़लाक़े में मदनी कामों की धूमें मचाना शुरूअ़ कर दीं। 1994 सि.ई. में **फ़ैज़ाने मदीना** के **मद्रसतुल मदीना** में बतौ़रे नाज़िम सुन्नतों की ख़िदमत का मौक़अ़ मिला। **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त उन्हें **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहौ़ल में इस्तिक़ामत इ़नायत फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अ़ताए ह़बीबे ख़ुदा मदनी माहौ़ल है फ़ैज़ाने ग़ौसो रज़ा मदनी माहौ़ल
अगर सुन्नतें सीखने का है जज़्बा तुम आ जाओ देगा सिखा मदनी माहौ़ल

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 646)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

इन्फ़िरादी कोशिश सवाब का आसान ज़रीआ़ है : इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! किस त़रह़ एक त़ालिबे इ़ल्म किसी इस्लामी भाई की **इन्फ़िरादी कोशिश** से **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहौ़ल से वाबस्ता हो गया। इज्तिमाई कोशिश के मुक़ाबले में **इन्फ़िरादी कोशिश** उ़मूमन सह्ल होती है क्यूं कि कसीर इस्लामी भाइयों के सामने ''बयान'' करने की सलाहिय्यत हर एक में नहीं होती जब कि **इन्फ़िरादी कोशिश** हर कोई कर सकता है ख़्वाह उसे बयान करना आता हो या न आता हो। इन्फ़िरादी कोशिश सवाब कमाने का आसान ज़रीआ़ है। **मदनी मर्कज़**

www.dawateislami.net

के दिये हुए त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए़ ख़ूब ख़ूब ख़ूब नेकी की दा'वत देते जाइये और सवाब का ख़ज़ाना लूटते जाइये।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

जहन्नम का खाना और लिबास मिलेगा : हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है : जिस शख़्स को किसी मर्दे मुस्लिम की **बुराई** करने की वज्ह से खाने को मिला, **अल्लाह** पाक उस को उतना ही जहन्नम से खिलाएगा और जिस को मर्दे मुस्लिम की **बुराई** की वज्ह से कपड़ा पहनने को मिला, **अल्लाह** पाक उस को जहन्नम का उतना ही कपड़ा पहनाएगा। और जो किसी शख़्स की वज्ह से सुनाने और दिखाने की जगह में खड़ा हो तो **अल्लाह** पाक उसे क़ियामत के दिन सुनाने और दिखाने की जगह में खड़ा करेगा। **(سُنَنِ ابوداؤد ج٤ ص٣٥٤ حدیث٤٨٨١)**

दोज़ख़ की आग के अंगारे खाएगा : मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ मिरआत जिल्द 6 सफ़ह़ा 619 ता 620 पर फ़रमाते हैं : या'नी इस त़रह़ (पर) कि दो लड़े हुए मुसल्मानों में से एक के पास जावे और उसे ख़ुश करने के लिये दूसरे की **ग़ीबत** करे, उसे बुरा कहे, उसे नुक़्सान पहुंचाने की तदबीरें बताए ताकि इस ज़रीए़ से येह शख़्स इसे कुछ दे दे या खिला दे। ऐसे ख़ुशामदी लोग आजकल बहुत हैं। मज़ीद फ़रमाते हैं : येह दोज़ख़ की आग के अंगारे उन लुक़्मों के इ़वज़ में जिस क़दर यहां लुक़्मे खाए उतने ही वहां

www.dawateislami.net

अंगारे खाएगा। जो किसी को ख़ुश करने के लिये मुसल्मान भाई की **ग़ीबत** करे या उसे सताए (और) इस **ग़ीबत** वग़ैरा के इ़वज़ कपड़ों का जोड़ा पाए तो उसे क़ियामत में इस जोड़े के इ़वज़ **आग का जोड़ा** पहनाया जाएगा। मुफ़्ती साहिब मज़ीद इस फ़रमाने आ़ली (''जो किसी की वज्ह से दिखाने और सुनाने की जगह खड़ा हो....اِلخ'' के बारे में फ़रमाते हैं कि इस) के बहुत मआ़नी हैं : एक येह कि जो शख़्स किसी मश्हूर शरीफ़ आदमी की पगड़ी उछाले (या'नी उस को बदनाम करे) उस का मुक़ाबला करे ताकि इस मुक़ाबले से मेरी **शोहरत** हो दूसरे येह कि जो किसी शख़्स को दुन्या में झूटे त़रीक़े से उछाले ताकि इस के ज़रीए़ मुझे **इ़ज़्ज़त व रोज़ी** मिले। जैसे आज कल बा'ज़ झूटे पीरों के मुरीद उस की झूटी करामतें बयान करते फिरते हैं ताकि हम को भी उस के ज़रीए़ इ़ज़्ज़त मिले कि हम उस (पहुंचे हुए मुर्शिद) के बालके (या'नी मुरीद या शागिर्द) हैं। तीसरे येह कि जो शख़्स दुन्या में नामो नुमूद चाहे नेकियां करे मगर नामवरी के लिये, या जो शख़्स किसी के ज़रीए़ से अपने (आप) को मश्हूर व नामवर करे क़ियामत में ऐसे शख़्सों को (सरे) आ़म रुस्वा किया जावेगा कि फ़िरिश्ता उसे ऊंची जगह खड़ा कर के ए'लान करेगा कि (ऐ) लोगो ! येह बड़ा झूटा मक्कार फ़रेबी (धोकेबाज़) था। (मिरआत)

जहन्नम की ग़िज़ा और मश्रूब : ऐ आ़शिकाने रसूल ! इस से वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो अपने अमीर, निगरान, अफ़्सर, सेठ, लीडर या किसी मालदार को अच्छा लगाने, उन की हमदर्दियां पाने, अपने आप को ''वफ़ादार'' जताने मगर ह़क़ीक़त में अपनी **ह़माक़त** पर मोह़र लगाने और ख़ुद को दोज़ख़ का ह़क़दार बनाने के लिये उस सेठ वग़ैरा के

www.dawateislami.net

सामने उस के मुख़ालिफ़ की पोलें खोलते और मुख़्तलिफ़ ज़ाविर्यों से उन की बुराइयां करते हैं। आह! न जहन्नम की ग़िज़ा खाई जा सकेगी न दोज़ख़ का लिबास पहना जा सकेगा। **जहन्नम की ग़िज़ा** का नक़्शा खींचते हुए **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 167 ता 168 पर फ़रमाते हैं : (जहन्नमियों को) ख़ारदार थूहड़ (एक कांटेदार ज़हरीला पौदा) खाने को दिया जाएगा, वोह ऐसा होगा कि अगर उस का एक क़त़रा दुन्या में आए तो उस की सोज़िश व बदबू तमाम अहले दुन्या की मई़शत बरबाद कर दे और वोह गले में जा कर फन्दा डालेगा, उस के उतारने के लिये (दोज़ख़ी लोग) पानी मांगेंगे, उन को वोह खौलता पानी दिया जाएगा कि मुंह के क़रीब आते ही मुंह की सारी खाल गल कर उस में गिर पड़ेगी, और पेट में जाते ही आंतों को टुकड़े टुकड़े कर देगा और वोह शोरबे की त़रह़ बह कर क़दमों की त़रफ़ निकलेंगी, प्यास इस बला की होगी कि उस पानी पर ऐसे गिरेंगे जैसे तोंस (या'नी सख़्त प्यास) के मारे हुए ऊंट। (बहारे शरीअ़त)

नारे जहन्नम से तू बचाना ख़ुल्दे बरीं में मुझ को बसाना
या रब अज़ पए शाहे मदीना या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 121)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى اللهِ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बे जा ए'तिराज़ात करने वाले : **ह़ज़रते** सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे उन लोगों पर तअ़ज्जुब है जो **सालिह़ीन** या'नी नेक लोगों के लिये मुबाह़ (या'नी जाइज़ चीज़) को भी **ऐ़ब** समझते हैं लेकिन अपने लिये क़बीह़ (या'नी बद तरीन) गुनाहों को भी मा'यूब ख़याल नहीं करते। तू देखेगा कि उन लोगों में कोई ख़ुद तो **ग़ीबत**, चुग़ली, ह़सद, कीना, धोका, तकब्बुर और ख़ुद पसन्दी की नुहूसतों में गिरिफ़्तार है और तौबा भी नहीं करता जब कि नेक लोगों पर मुबाह़ (या'नी जाइज़) लिबास, लज़ीज़ खाने और मुबाह़ (जाइज़) मिठाई के इस्ति'माल पर भी ए'तिराज़ करता है। (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّيْن ص٦٦)

ख़ुद चाहे ह़राम खाते हों मगर..... : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! वाक़ेई बा'ज़ लोगों की येह आ़दत होती है कि ख़ुद चाहे सूदी क़र्ज़े ले कर, झूट बोल कर, मिलावटें और टेक्स की चोरियां कर के नापाक या ह़राम रोज़ी कमाएं मगर किसी आ़लिम, ख़त़ीब या इमाम साह़िब को कहीं से नज़राना मिला, इन को लोगों के घर दा'वते त़आ़म में आता जाता देखा, किसी ने बच्चे वग़ैरा की विलादत की ख़ुशी में इन्हें मिठाई का डिब्बा पेश किया तो येह लोग अपनी गन्दी आमदनियों को भूल कर उस आ़लिम साह़िब की **ग़ीबत** पर उतर आते और مَعَاذَ الله इस त़रह़ के गुनाहों भरे जुम्ले कहते सुनाई देते हैं : ﴾1﴿ खाऊ मौलवी है ﴾2﴿ पेटू है ﴾3﴿ ह़लवा ख़ोर है ﴾4﴿ नज़रानों के लिये मरता है ﴾5﴿ मुफ़्त की दा'वतें खा कर पेट निकल आया है ﴾6﴿ खा खा कर गरदन मोटी कर ली है ﴾7﴿ लालची मौलाना है वग़ैरा।

www.dawateislami.net

दूसरे की आंख का तिन्का तो नज़र आता है मगर..... :

याद रखिये ! इमाम या आ़लिम साहिब का किसी मुसल्मान से नज़राना, दा'वत या मिठाई क़बूल करना जाइज़ काम है गुनाह व ह़राम नहीं बल्कि अच्छी अच्छी निय्यतें हों तो कारे सवाब है। मो'तरिज़ को अपनी आमदनी पर नज़र दौड़ानी चाहिये, **ह़राम** हो तो उस से भी नीज़ **ग़ीबतों**, तोहमतों और बद गुमानियों से तौबा और इस के तक़ाज़े पूरे करने चाहिएं। ग़ौर तो कीजिये ! जब आप किसी की त़रफ़ एक उंगली उठाते हैं तो हाथ की तीन उंग्लियों का रुख़ ख़ुद आप की त़रफ़ हो जाता है गोया येह ख़ामोश तम्बीह (नोटिस) है कि उस को बा'द में छेड़ना पहले अपने आप को सुधार ! **ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा** رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : दूसरे की आंख का तिन्का तो तुम्हें नज़र आ जाता है (या'नी ज़रा ज़रा सी बात में उस का ऐ़ब बयान करता फिरता है) मगर अपनी आंख का शहतीर (या'नी बड़ी लकड़ी, मत़लब येह कि अपना बहुत बड़ा ऐ़ब भी) नज़र नहीं आता !

(ذَمُّ الْغِيبَةِ لِابْنِ اَبِی الدُّنْیا ص۹۵ رقم۵۷)

कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब ! नेक कब ऐ मेरे अल्लाह ! बनूंगा या रब !
कब गुनाहों के मरज़ से मैं शिफ़ा पाऊंगा कब मैं बीमार, मदीने का बनूंगा या रब !

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 121)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللهِ ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ऐसे काम न करो कि लोग ग़ीबत करें : ऐ आ़शिक़ाने **रसूल !** अ़वाम व ख़वास हर एक को चाहिये कि मोह़तात़ ज़िन्दगी गुज़ारें ऐसे मुबाह़ आ'माल व अफ़्आ़ल से भी अपने आप को बचाएं जो कि फ़त्हे बाबे ग़ीबत या'नी **ग़ीबत** का दरवाज़ा खुलने का सबब बनें। इस ज़िम्न में फ़तावा रज़विय्या जिल्द 21 सफ़ह़ा 612 ता 616 पर एक फ़ारसी सुवाल जवाब (जिस का तरजमा भी वहीं मौजूद है) का अक्सर ह़िस्सा पेश किया जाता है, इसे पढ़ कर अन्दाज़ा किया जा सकता है कि ऐसी ह़रकतें करना किस क़दर बुरा है जो मुसल्मानों में **ग़ीबतों,** तोह्मतों और बद गुमानियों और आपसी नफ़रतों का सबब बनें चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमते बा बरकत में **सुवाल** हुवा : उ़लमाए शरीअ़त और मुफ़्तियाने त़रीक़त इस मस्अले में क्या फ़रमाते हैं कि **ज़ैद** एक मक़ाम पर इमामत व नियाबत के फ़राइज़ अन्जाम देता है लेकिन जो लोग सुवर और मुर्दार का गोश्त पका कर ईसाइयों (या'नी क्रिस्चेनों) को खिलाते हैं **ज़ैद** उन लोगों के घरों से खाना खाता है और कहता है कि ''मुर्दार और सुवर का गोश्त ईसाइयों (या'नी क्रिस्चेनों) के लिये पकाने में कोई ह़रज नहीं, पकाने के बा'द हाथ धो डाले तो पाक हो जाते हैं।'' शह्र के अक्सर लोग **ज़ैद** के इस त़र्ज़े अ़मल को देख कर उन लोगों के घरों से खाना खाने लगे हैं जब कि कुछ लोग इस अ़मल से नफ़रत और सख़्त इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं और निज़ाअ़ (या'नी फ़साद) की सूरत बन गई है।

www.dawateislami.net

लिहाज़ा किताबो सुन्नत की रोशनी में बयान फ़रमाया जाए कि शख़्से मज़्कूर (या'नी ज़ैद) के बारे में क्या शर्ई हुक्म है और इस की मुआ़वनत व इमदाद और इस से तआ़वुन करने वालों के बारे में शरीअ़त क्या फ़रमाती है ? بَيِّنُوْا تُوْجَرُوْا (बयान फ़रमाओ ताकि अज्रो सवाब पाओ)

अल जवाब : ऐसे निडर, बे ख़ौफ़ और तक़्वा से आ़री लोग जो ग़ैर मुस्लिमों के लिये (सुवर व मुर्दार जैसी) ख़बीस तरीन और नजिस (या'नी नापाक) व ह़राम चीज़ें पकाने खिलाने का पेशा इख़्तियार करते हैं। ऐसे लोगों के हां से दीनदारों और तक़्वादार लोगों को खाना हरगिज़ नहीं खाना चाहिये क्यूं कि जहां **ह़राम** चीज़ों का इस्ति'माल कसरत से हो वहां बरतनों के नापाक अश्या से आलूदा होने का एह़तिमाल (या'नी शुबा) होता है। और दीनदार व तक़्वादार लोगों का ऐसे लोगों के हां जाना और उन के हां से ऐसे मश्कूक बरतनों में खाना खाना अ़वामुन्नास की निगाहों में बाइ़से इल्ज़ाम व बाइ़से **तोहमत** हो सकता है। ह़दीस शरीफ़ में है : ''जो कोई **अल्लाह** पाक और क़ियामत पर ईमान रखता है तो वोह मक़ामाते तोहमत से बचे।'' लिहाज़ा ऐसी सूरते ह़ाल में इल्ज़ाम, त़ा'न और **तोहमत** से बचना ज़रूरी है ब सूरते दीगर येह इक़्दाम अपने दीनी भाइयों को कबीरा गुनाहों **ग़ीबत**, **बोहतान, कीना** और **बुरे अल्क़ाब** के इस्ति'माल में मुब्तला कर देगा। ह़दीसे मुबारक है : (लोगो !) जिन कामों को कान ना पसन्द करते हैं उन से बचो। (مُسند اِمام احمد ج۵ص۶۰۵حدیث۱۶۷۰۱) और दूसरी ह़दीसे पाक में है : और ऐसे कामों से परहेज़ करो जिन के इरतिकाब

www.dawateislami.net

पर मा'ज़िरत करनी पड़े। (اَلْاَحَادِیْثُ الْمُخْتَارَة ج٦ص١٨٨حدیث٢١٩٩) और बिग़ैर शर्ई मजबूरी के मुसल्मानों को मुतनफ़्फ़िर करना (या'नी मुसल्मानों को नफ़रत दिलाना) मम्नूअ़ है। चुनान्चे हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : بَشِّرُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا या'नी मुसल्मानों को ख़ुश ख़बरी दो और नफ़रत न दिलाओ। (بُخاری ج١ص٤٢حدیث٦٩) शरीअ़त का मक़्सद जोड़ना, इत्तिहाद पैदा करना है, न कि तोड़ना। अ़क़्ले सलीम का तक़ाज़ा भी येही है कि लोगों को बे क़रारी में डाल कर नाराज़ न किया जाए और कराहत व इल्ज़ाम वाली जगह खड़े होने से परहेज़ किया जाए, ह़दीसे पाक में इर्शादे नबवी है : **अल्लाह** पाक पर ईमान लाने के बा'द अ़क़्ल की बुन्याद लोगों से दोस्ती और मह़ब्बत रखना है। (جَمْعُ الْجَوَامِع لِلسُّيُوطِی ج٤ص٣٣٩حدیث١٢٣٣٢) फ़क़ीर (या'नी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) ने इस बाब की ह़दीसों को अपने रिसाले **जमालुल इज्माल** और इस की शर्ह़ **कमालुल इक्माल** में तफ़्सीलन बयान कर दिया है। ख़ुलासा येह कि अ़क़्ल व नक़्ल के ए'तिबार से इस त़रह़ का काम या इक़्दाम अपने अन्दर कई क़िस्म की क़बाह़तें (ख़राबियां) रखता है कि जिन का इन्कार नहीं किया जा सकता और ऐसे कामों का अन्जाम मज़्मूम होता है। (और) जब येह काम या इक़्दाम फ़ितना व फ़साद और मुसल्मानों के दरमियान तफ़्रीक़ और फूट पड़ने की ह़द तक जा पहुंचे तो जुर्मे अ़ज़ीम बन जाता है चुनान्चे इर्शादे रब्बानी है : وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और इन का फ़साद तो क़त्ल से भी सख़्त है। (پ٢، البقرة:١٩١)) और ह़दीस शरीफ़ में है कि फ़ितना सो रहा है उस के जगाने

www.dawateislami.net

वाले पर **अल्लाह** पाक की ला'नत। (اَلْجامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطی ص۳۷۰حدیث۵۹۷۵) अगर आप अच्छी त़रह़ ग़ौर करें तो येह वाज़ेह़ होगा कि इस क़िस्म के अफ़्आ़ल उन्ही लोगों से सरज़द होते हैं जो दीन और तक़ाज़ए दीन को चन्दां (या'नी बिल्कुल) अहम्मिय्यत नहीं देते, बे ख़ौफ़ हो कर बिल्कुल आज़ादाना ला परवाई वाली ज़िन्दगी गुज़ारना ज़िन्दगी का ह़ासिल (या'नी मक़्सदे ह़यात) समझते हैं। कुछ आगे चल कर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ईसाइयों (या'नी क्रिस्चेनों) के साथ मिल कर खाना पीना और इस क़िस्म के दूसरे काम करना कज फ़ित़रत (या'नी बद अख़्लाक़) और फ़ितने बाज़ लोगों का काम होता है। मज़ीद आगे चल कर फ़रमाते हैं : और जिस किसी ने येह कहा कि सुवर और मुर्दार का गोश्त पकाने और ग़ैर मुस्लिमों को खिलाने से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता या कुछ मुज़ायक़ा और ख़त़रा नहीं, वोह शख़्से मज़्कूर (या'नी ज़ैद) ग़लत़ बात कहने का मुरतकिब हुवा बिग़ैर इ़ल्म व तह़क़ीक़ के इस क़िस्म का फ़ैसला सादिर कर देना हरगिज़ मुनासिब नहीं, बिग़ैर शर्इ़ मजबूरी के गन्दगियों से आलूदा होना सख़्त मम्नूअ़ और ना जाइज़ है बिल ख़ुसूस ऐसे कामों से परहेज़ करना बहुत ज़रूरी है जिन का ह़ासिल (या'नी नतीजा) उन कामों की इस्लाह़ करने का इरादा करना है जिन्हें **अल्लाह** पाक ने बिगाड़ दिया है और गैर मुस्लिमों को खाना खिलाने के लिये मुसल्मानों का अपने हाथों ना जाइज़ व ह़राम चीज़ों को पकाना यक़ीनन ना जाइज़ और **ह़राम** है। और येह क़ाइदा व उसूल है कि **जिस चीज़ का लेना ह़राम है उस का देना भी**

www.dawateislami.net

ह़राम है। अल्लाह पाक ने इर्शाद फ़रमाया है : وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो। (پ٦، المائدہ: ٢) और **अल्लाह** पाक, बरतर और सब कुछ जानने वाला है।

छुप के लोगों से किये जिस के गुनाह वोह ख़बरदार है क्या होना है
अरे ओ मुजरिमे बे परवा देख सर पे तलवार है क्या होना है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 167)

दावते इस्लामी के चैनल पर मदनी मुज़ाकरा सुनने की मदनी बहार : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه आशिकाने रसूल की मदनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मुतअ़द्दिद शो'बे हैं जिन के ज़रीए इस्लाम की बहारें लुटाई जा रही हैं, इन्हीं में एक शो'बा **''दीनी चेनल''** भी है जो T.V. के ज़रीए घरों के अन्दर दाख़िल हो कर **दा'वते इस्लामी** इस्लाम का पैग़ाम आ़म कर रही है। **दावते इस्लामी का चैनल** वाह़िद चैनल है जो कि सो फ़ीसदी इस्लामी रंग में रंगा हुवा है, इस में न फ़िल्में डिरामे हैं न गाने बाजे और न औ़रत की नुमाइश है न ही किसी क़िस्म की मूसीक़ी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه **इस चैनल** के ज़रीए बे शुमार बे नमाज़ी नमाज़ों के पाबन्द बने हैं और ला ता'दाद अफ़राद गुनाहों से ताइब हो कर सुन्नतों पर अ़मल करने लगे हैं। **इस चैनल** की बरकतों का अन्दाज़ा लगाने के लिये इस की एक **मदनी बहार** मुलाह़ज़ा हो चुनान्चे **एक** इस्लामी भाई ने मुझे बर्क़ी डाक (E.MAIL) के ज़रीए एक ''मदनी बहार'' पेश की उस का लुब्बे लुबाब है : आज कल येह ह़ाल है कि

www.dawateislami.net

दौराने गुफ़्तगू अक्सर इस बात का अन्दाज़ा नहीं हो पाता कि **ग़ीबत** का सिल्सिला शुरूअ़ हो चुका है ! एक इस्लामी भाई ने चन्द इस्लामी भाइयों की मौजूदगी में कहा : मेरे एक दोस्त ने मुझे बताया कि मेरी बहन जो कि इन्तिहाई **ग़ुसीली** त़बीअ़त की है, अगर कभी किसी से नाराज़ हो जाए तो ख़ुद से बढ़ कर मुलाक़ात में पहल नहीं करती, मेरी भाभी और बहन में चन्द मुआ़मलात की बिना पर आपस में चपक़लश हुई और बहन ने बातचीत बन्द कर दी, हुस्ने इत्तिफ़ाक़ कि उसी रात **दा'वते इस्लामी** के हर दिल अ़ज़ीज़ सो फ़ीसदी **इस्लामी चेनल** पर ''मदनी मुज़ाकरा'' नश्र किया गया जिस में **ग़ीबत की तबाह कारियों** से बचने का ज़ेह्न दिया गया था। मेरी बहन ने जब वोह मदनी मुज़ाकरा सुना तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه मेरी वोही **ग़ुसीली** बहन जो बढ़ कर किसी से मुलाक़ात नहीं करती थी अज़ ख़ुद आगे बढ़ी और उस ने मेरी भाभी से न सिर्फ़ मुलाक़ात की बल्कि मुआ़फ़ी भी मांगी और दोनों में सुल्ह़ हो गई।

बहार में चार ग़ीबतें : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अभी जो आप ने **मदनी बहार** मुलाह़ज़ा की उस के आग़ाज़ में लिखा है कि दौराने गुफ़्तगू अक्सर अन्दाज़ा ही नहीं होता कि **ग़ीबत** का सिल्सिला शुरूअ़ हो चुका है तो वाक़ेई ऐसा ही है, ख़ुद इस **मदनी बहार** में भी 4 **ग़ीबतें** की गई हैं। अलबत्ता इन ग़ीबतों को ''गुनाहों भरी ग़ीबतें'' नहीं कहेंगे कि गुनाह होने के लिये येह भी ज़रूरी है कि वोह किसी मुअ़य्यन या'नी मख़्सूस फ़र्द

www.dawateislami.net

की **ग़ीबत** हो, यहां मदनी बहार में ऐब के ह़वाले से सिर्फ़ "बहन" का तज़्किरा है मगर कौन सी बहन येह तै़ नहीं है, हो सकता है कि क़ाइल की कई बहनें हों। हां जिस के सामने मदनी बहार बयान की उस को मुअ़य्यन (PARTICULAR) बहन का मा'लूम है या येह जानता है के क़ाइल की एक ही बहन है और मदनी बहार भी बिग़ैर शर्ई इजाज़त के बयान की गई हो तो अब वोह **चारों ग़ीबतें** गुनाहों भरी हैं, बहर ह़ाल गुफ़्तगू में एह़तियात़ का ज़ेह्न देने के लिये इस **मदनी बहार** में मौजूद **चार ग़ीबतों** का ज़िक्र किया जा रहा है : ﴾1﴿ मेरी बहन इन्तिहाई **ग़ुसीली** है ﴾2 ता 3﴿ अगर किसी से नाराज़ हो जाए तो ख़ुद से बढ़ कर सुल्ह़ की सूरत नहीं बनाती। येह दोनों **ग़ीबतें** दो दो मर्तबा की गई हैं ﴾4﴿ बहन और भाभी की आपस में चपक़लश और नाराज़ी का तज़्किरा करना घर का राज़ फ़ाश करना हुवा जो कि एक ना शाइस्ता ह़रकत और मिन जुम्ला अस्बाबे **ग़ीबत** है। इस **मदनी बहार** को बयान करने वाले इस्लामी भाई ने अपनी बहन के **ग़ुसीली** होने वग़ैरा का तज़्किरा अगर इस निय्यत से किया है कि इस से सुन्नतों भरे **इस्लामी चेनल** की तश्हीर हो और लोगों को इस की अहम्मिय्यत का पता चले तो येह एक बहुत अच्छी निय्यत है। मगर ऐसे मौक़अ़ पर इशारे किनाए में बात करनी अन्सब (मुनासिब तर) है या'नी नाम लिये और अ़लामत ज़ाहिर किये बग़ैर इस त़रह़ रम्ज़ (या'नी इशारे) में बात करे के मुख़ात़ब (या'नी जिस से बात की जा रही है

www.dawateislami.net

वोह) समझ ही न सके कि किस के बारे में गुफ़्तगू की जा रही है, मसलन यूं कहे : एक इस्लामी भाई के साथ येह वाक़िआ़ पेश आया कि उन की बहन **ग़ुसीली** थी.....اِلخ। मगर इस दौरान सन्जीदा अन्दाज़ ज़रूरी है वरना मख़्सूस अन्दाज़ में मुस्कुराने वग़ैरा से हो सकता है कि सुनने वाले समझ जाएं कि येह तो ख़ुद सुनाने वाले के अपने ही घर का क़िस्सा है !

इलाही ! अपनी रह़मत से तू ह़िम्मत का ख़ज़ीना दे हमें अ़क़्ले सलीम मौला ! पए शाहे मदीना दे
ख़ुदाया गुफ़्तगू करने का तू मदनी क़रीना दे बचा ग़ीबत से, बक बक से हमें क़ुफ़्ले मदीना दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللهِ ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

आक़ा की सह़ाबा से मह़ब्बत : अल्लाह पाक की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें देने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने उल्फ़त निशान है : मुझे कोई सह़ाबी किसी की त़रफ़ से कोई बात न पहुंचाए, मैं चाहता हूं कि तुम्हारे पास साफ़ सीना आया करूं। (سُنَنِ ابوداؤد ج٤ ص٣٤٨ حديث ٤٨٦٠)

मुह़क़्क़िक़ अ़लल इ़त्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से **''मुझे कोई सह़ाबी किसी की त़रफ़ से कोई बात न पहुंचाए''** की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : ''या'नी किसी की कोताही, फ़े'ले बद, आ़दते बद, उस ने येह किया या उस ने येह कहा, फ़ुलां इस त़रह़ कह रहा

www.dawateislami.net

था।" (اشعۃ اللمعات ج ٤ ص ٨٣) ह़दीस शरीफ़ के इस हि़स्से **"मैं चाहता हूं कि तुम्हारे पास साफ़ सीना आया करूं"** का खुलासा करते हुए **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : या'नी किसी की अ़दावत, किसी से नफ़रत दिल में न हुवा करे। येह भी हम लोगों के लिये **बयाने क़ानून** है कि अपने **सीने** (मुसल्मानों के कीने से) साफ़ रखो ताकि इन में **मदीने** के अन्वार देखो, वरना **हु़ज़ूर** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सीनए रह़मत, नूरे करामत का गन्जीना है वहां कदूरत (या'नी बुग़्ज़ो कीने) की पहुंच ही नहीं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 472)

तुम को तो ग़ुलामों से है कुछ ऐसी मह़ब्बत : سُبْحٰنَ الله ! मज़्कूरा ह़दीसे मुबारक में वारिद शुदा इर्शादे गिरामी प्यारे प्यारे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अपने ग़ुलामों से मह़ब्बत की अथाह गहराइयों का पता देता है! मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के भाईजान, शहन्शाहे सुख़न, उस्ताज़े ज़मन ह़ज़रते मौलाना **ह़सन** रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने कितना प्यारा शे'र कहा है :

तुम को तो ग़ुलामों से है कुछ ऐसी मह़ब्बत
है तर्केअदब वरना कहें हम पे फ़िदा हो

(ज़ौक़े ना'त)

पीर की नज़र से मुरीद को गिराने की कोशिश करने वालों को तम्बीह : मज़्कूरा ह़दीसे पाक से वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल

करें जो कि शागिर्द की **उस्ताद** से, बेटे की **बाप** से, मुलाज़िम की **सेठ** से, मा तहूत की **निगरान** से और मुरीद की उस के **पीर साहिब** से बिला मस्लहते शर्ई कमज़ोरियां और बुराइयां बयान कर के **ग़ीबत** का कबीरा गुनाह करने के साथ साथ उस को उन की नज़र से गिरा देते हैं, शायद उन्हें इस बात का होश भी नहीं होता कि वोह ऐसा कर के कितनी बड़ी ख़राबियों का बाइस बनते हैं, ज़ाहिर है जब शागिर्द अपने **उस्ताद** की, मा तहूत अपने **निगरान** की और मुरीद अपने **पीरो मुर्शिद** की नज़र से गिर गया तो बेचारे का जो अन्जाम होगा वोह हर ज़ी शुऊर समझ सकता है। काश ! येह **ग़ीबत** करने वाला **ग़ीबत** करने से क़ब्ल ख़ुद अपने लिये ग़ौर कर लेता कि अगर मुझे कोई अपने पीर साहिब या दीनी उस्ताज़ की निगाह से गिरा दे तो मुझ पर क्या गुज़रे ! ऐ काश ! पीरो मुर्शिद की नज़र से हम कभी भी न गिरें ! सद करोड़ काश ! हम हमेशा हमेशा अपने मुर्शिदे गिरामी की सीधी और मीठी मीठी नज़र में रहें :

सदा पीरो मुर्शिद रहें मुझ से राज़ी

कभी भी न हों येह ख़फ़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 101)

आह ! काश हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम गुनहगारों से सदा ख़ुश रहें, कभी भी हमें अपनी निगाहे इनायत से दूर न फ़रमाएं कि

न उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा की क़सम !

कि जिस को तूने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

www.dawateislami.net

या रब्बे मुस्तफ़ा ! हमारी तमाम ख़ताओं को मुआफ़ फ़रमा दे और हमेशा हम पर रहमत की नज़र रख। आह ! अगर तू नाराज़ हो गया तो हमारे प्यारे प्यारे **अल्लाह** ! हम किस के दरवाज़े पर जाएंगे !

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !
अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 85)

''बड़ों'' को भी चाहिये ''छोटों'' से ग़ीबत न सुनें :

''बड़ों'' या'नी उस्तादों, निगरानों वग़ैरा की ख़िदमतों में **मदनी इल्तिजा** है कि जब कोई शख़्स आप के पास आ कर आप के किसी मा तहूत की बिला मस्लहते शर्ई **ग़ीबत** करने लगे तो क़ुदरत होने की सूरत में फ़ौरन उसे रोक दीजिये, वरना **ग़ीबत** सुनने के गुनाह में पड़ सकते हैं। अगर **ग़ीबत** सुन कर आप को **ग़ुस्सा** आ गया और ज़बान से ''कुछ'' निकल गया तो हो सकता है कि वोही **ग़ीबत** करने वाला **मुग़्ताब** को या'नी जिस की **ग़ीबत** कर रहा था उस को आप के ''अल्फ़ाज़'' पहुंचा दे और फिर मज़ीद गुनाहों भरे मसाइल पैदा हों। बिलफ़र्ज़ **ग़ीबत** करने वाला आप के पास किसी की बुराई पहुंचाने में काम्याब हो भी गया हो और आप ने भी **ग़ीबत** से बचने के त़रीक़ों पर अ़मल न किया हो तो अपनी आख़िरत की भलाई की ख़ातिर हाथों हाथ तौबा और इस के तक़ाज़े पूरे कर लीजिये और **ग़ीबत** करने वाले पर **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के उसे भी तौबा करवा दीजिये नीज़ **मुग़्ताब** या'नी जिस की **ग़ीबत** की गई है

www.dawateislami.net

उस के मुतअ़ल्लिक़ हरगिज़ **बद गुमानी** मत कीजिये, न ही उस पर अपनी शफ़्क़तें कम कीजिये कि आप को जो कुछ किसी के बारे में बताया गया इस का कोई सुबूत भी नहीं, مَعَاذَاللّٰه **ग़ीबत** करने वाले के ज़रीए़ मिली हुई बात किसी और को बताने का जज़्बए शर पैदा होते ही इस **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ज़ेह्न में दोहराइये : **كَفٰى بِالْمَرْءِ كَذِبًا** اَنْ يُّحَدِّثَ بِكُلِّ مَاسَمِعَ. या'नी किसी इन्सान के झूटा होने को येही काफ़ी है कि वोह हर सुनी सुनाई बात (बिग़ैर तह़क़ीक़ किये) बयान कर दे। (مُقَدّمه صَحیح مُسلِم ص۸ حدیث۵) फिर इस ह़दीसे पाक में की हुई मुमानअ़त के मुत़ाबिक़ अ़मल करने की निय्यत से उस बात को किसी के आगे बयान मत कीजिये वरना ख़ुद भी **ग़ीबत** व इफ़्क (तोहमत, बोहतान) वग़ैरा के गुनाहों की आफ़त में फंस जाएंगे। हां जिस की **ग़ीबत** की गई थी उस की तस्दीक़ हो जाने पर अच्छी अच्छी निय्यतें कर के उस मा तह़्त की ज़रूर इस्लाह़ फ़रमा दीजिये। आप को अगर्चे ब ज़ाहिर कोई बड़ाई मिल भी गई हो मगर **अल्लाहु** क़दीर की **ख़ुफ़्या तदबीर** से हमेशा डरते रहिये, मह़्ज़ रस्मी कलामी नहीं दिल की गहराई से आ़जिज़ी आ़जिज़ी और आ़जिज़ी करते रहिये, अपनी कम मायगी व बे बिज़ाअ़ती (या'नी कम हैसिय्यती) का ए'तिराफ़ करते हुए अ़र्ज़ कीजिये :

ख़ाक मुझ में कमाल रखा है मुस्त़फ़ा ने संभाल रखा है
मेरे ऐ़बों पे डाल कर पर्दा मुझ को अच्छों में डाल रखा है

www.dawateislami.net

तेरा ए 'जाज़ कब का मर जाता

तेरे टुकड़ों ने पाल रखा है

चुग़ल ख़ोर कभी सच्चा नहीं हो सकता : जब भी आप के पास कोई आ कर किसी की **ग़ीबत** करे उस पर हरगिज़ ए'तिमाद मत कीजिये, क्यूं कि **ग़ीबत** करने के सबब वोह फ़ासिक़ हो जाता है और **फ़ासिक़** की ख़बर मो'तबर नहीं होती। ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम मुह़म्मद बिन शिहाब ज़ोहरी** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक मर्तबा **बादशाह** सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक के पास तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख़्स आया, **बादशाह** ने क़दरे ना गवारी के साथ उस से कहा : "मुझे पता चला है तुम ने मेरे ख़िलाफ़ फुलां फुलां बात की है !" उस ने जवाब दिया : मैं ने तो ऐसा कुछ नहीं कहा। **बादशाह** ने इसरार करते हुए कहा : जिस ने मुझे बताया है, वोह (कैसे झूट बोल सकता है बहुत) **सच्चा** आदमी है। तो ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम ज़ोहरी** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने **बादशाह** को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया : (आप को जिस ने इस त़रह़ की ख़बर दी वोह तो चुग़ली खाने वाला हुवा और) "**चुग़ल ख़ोर कभी सच्चा हो नहीं सकता !**" येह सुन कर बादशाह संभल गया और कहने लगा : हुज़ूर ! आप ने बिल्कुल बजा फ़रमाया। फिर उस शख़्स से कहा : اِذْهَبْ بِسَلَامٍ या'नी तुम सलामती के साथ लौट जाओ।

(اِحیاءُ الْعُلوم ج ۳ ص ۱۹۳)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आशिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना जाएज़ा लेते हुए नेक आ'माल का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل " अपनी इस्लाह़ के लिये **"नेक आ'माल"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"मदनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل